कलीसिया परिशिष्ट 2

1.	प्रार्थना	*(मृत्यु उपरान्त जीवन)*

मृत्यु उपरान्त जीवन का सिद्धान्त

(1) स्वर्गीय वस्तुएं।

यूहन्ना 3:13 में यीशु ने कहा "कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है। स्वर्गीय वस्तुएं वास्तव में खास तौर पर परमेश्वर की अनन्त उद्धार की योजना है यीशु जिसका वर्णन 3:13-18 में करते हैं। केवल परमेश्वर का पुत्र ही परमेश्वर की उपस्थिति में रहा है और केवल वही उन निर्णयों के बारे में जानता है जो स्वर्ग में लिए गये हैं। अत: सारी जातियों के लोगों को बचाने की परमेश्वर की योजना और उस योजना को यीशु मसीह की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान द्वारा पूरा करना पूरी तरह से मनुष्य की समझ से तब तक परे है जब तक कि परमेश्वर स्वयं मनुष्यों पर अपनी योजना को प्रगट न कर दे। केवल यीशु मसीह ही स्वर्ग से उतरा और केवल यीशु मसीह ही स्वर्ग पर चढ़ा था(इफिसियों 4:9-10)[1]। केवल यीशु मसीह ही परमेश्वर पिता की उद्धार के निमित्त योजना को जानता है। केवल यीशु मसीह ही परमेश्वर के उद्धार की योजना को प्रगट करता वरन उसे पूरा भी करता है। (उदाहरण मत्ती 11:25-27; प्रकाशितवाक्य 5:1-7)

(2) बाइबल हमें स्पष्ट तौर पर मृत्यु उपरान्त जीवन के बारे में बताती है।

- बाइबल हमें सिखाती है कि मनुष्य एक "जीवित प्राणी" है(उत्पत्ति 2:7) जिसमें प्रत्यक्ष देह और अदृश्य आत्मा शामिल होती है।
- मनुष्य की आत्मा अविनाशी है और मनुष्य के शरीर में वास करती है। परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में अनन्त काल का ज्ञान रख छोड़ा है। (सभोपदेशक 3:11)
- मृत्यु के पश्चात मसीहियों की आत्मा तुरन्त स्वर्ग में चली जाती है(फिलिप्पियों 1:23);वे पूरी तरह से दूसरों को लेकर सचेत होते हैं और उन्हें (मसीह) पहिचानते हैं और अब वे यीशु मसीह की मानव आत्मा जैसे बन गये हैं(1यूहन्ना 3:2)। लेकिन मृतक व्यक्ति की आत्मा धरती पर रहने वाले लोगों के साथ किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं साध सकती। (सभोपदेशक 9:5,6,610)।
- यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर मसीही लोगों की देहों का पुनरूत्थान हो जाएगा और उनकी देह रूपान्तरित होकर मसीह की देह के समान बन जाएगी। (फिलिप्पियों 3:21)।

(देखें मैनुएल 6, अध्याय 23 और 5- गुज़रे पुरखाओं से सम्बन्ध)

मृत्यु उपरान्त मनुष्य का क्या होता है के सन्दर्भ में विभिन्न बाइबलरहित सिद्धान्तों का खण्डन ।

क . भूगर्भ अर्थात अधोलोक सम्बन्धी सिद्धान्त

1. भू-गर्भ(अधोलोक) सिद्धान्त बाइबल आधारित नहीं है।

भू-गर्भ का सिद्धान्त सिखाता है कि भूगर्भ, जिसे पुराने और नये नियम में "अधोलोक" के नाम से जाना जाता है वह, विश्वासी या गैर विश्वासी सभी मृतकों का निवास स्थान है। भू-गर्भ सिद्धान्त दो प्रारूपों में विद्यमान है:

(1) प्रथम भूगर्भ (अधोलोक) सिद्धान्त (एक उदासीन स्थान)

जब कोई धर्मी या दुष्ट जन मरता है, तो दोनों की ही देह और आत्माएं(या प्राण)ज़मीन के नीचे यथार्थ स्थान में उतर जाती हैं, जिसे अधोलोक भी कहा जाता है। यह स्थान धरती के गर्भ में कहीं छुपा उदासीन स्थान है। यह एक अन्धकार और एक विस्मृति का स्थान है, जहां पर उनको एक नियति के तहत रखा गया है, जो पृथ्वी पर विद्यमान जीवन का एक काल्पनिक आभास है। वे अधोलोक को ऐसे स्थान के रूप में परिभाषित करते हैं जहां पर विवेक, क्रिया कलाप और कोई आनन्द नहीं है। वे विश्वास करते हैं कि अधोलोक किसी को पुरस्कार या किसी को दण्ड देने का स्थान नहीं है।

दूसरे धर्मों का भी यही विश्वास है। वे विश्वास करते हैं कि लोग जिस प्रकार से पृथ्वी पर जीवन व्यतीत करते हैं ठीक उसी प्रकार से वे अधोलोक में भी जीवन व्यतीत करते हैं। वे विश्वासी करते हैं कि मृतक लोगों को अधोलोक में जीवन यापन करने के लिए धन, घर, भोजन, कपड़े और अन्य विलासप्रिय वस्तुओं की जरूरत पड़ती है, और ये सारी वस्तुएं उन्हें धरती पर रहने वाले उनके रिश्तेदारों के द्वारा उन्हें मुहैय्या करायी जानी चाहिए।

(2) दूसरा भू-गर्भ सिद्धान्त (एक विभाजित स्थान)

भूगर्भ अर्थात अधोलोक कोई उदासीन स्थान नहीं है वरन इसे दो भागों में बांटा गया है, अच्छे लोगों के लिए नियुक्त स्थान को फिरदौस और बुरे लोगों के लिए नियुक्त स्थान को गेहेन्ना कहा जाता है। न्याय के दिन तक भले लोगों को उनके किये के अनुसार फिरदौस में थोड़ा प्रतिफल का आनन्द उठाने का अवसर मिलता है जबकि दुष्ट लोगों को उनके बुरे कामों के अनुसार गेहेन्ना में छोड़ा दण्ड मिलता है। एक समूह के लोग मानते हैं कि फिरदौस केवल यहूदियों के लिए ही है। जबकि दूसरा समूह मानता है कि केवल वे यहूदी ही फिरदौस के भागीदार होते हैं जो व्यवस्था का पालन करते हैं अन्यथा बाकि सभी यहूदी और अन्यजाति के लोग गेहेन्ना के भागीदार होगें। यहूदी विश्वास करते हैं कि आनेवाला मसीह यहूदियों को अधोलोक से छुटकारा देगा अर्थात वहां से बाहर निकालेगा जबकि अन्यजाति के सभी लोग अर्थात गैर-यहूदी हमेशा के लिए उसी अन्धकारमय अधोलोक में ही रहेगें।

मसीहियों का एक समूह यह विश्वास करता है कि यीशु मसीह के स्वर्गारोहण से पूर्व, सारे विश्वासी फिरदौस में गये, लेकिन उसके स्वर्गारोहण के बाद वे स्वर्ग में जाते हैं।

अधोलोक सम्बन्धी दोनों ही सिद्धान्त बाइबल आधारित नहीं हैं।

2. अधोलोक सम्बन्धी बाइबल आधारित शिक्षाएं।

बाइबल में "शिलोह" या "हेड्स" का अर्थ बाइबल के अनुच्छेदों में हमेशा एक समान नहीं होता है। यह शब्द मृत्यु के तीन अलग अलग पहलुओं को दर्शाता है।

- प्रतीकात्मक रूप में यह मृत्यु की अवस्था को दर्शाता है।
- यर्थाथ रूप में यह मृत्यु के स्थान को दर्शाता है, जो कि कब्र हो सकती है जिसमें सभी मृतकों की देह को रखा जाता है।
- वास्तव में यह नरक को दर्शाता है, अर्थात वह स्थान जहां केवल मरे हुए दुष्ट लोगों की आत्माओं को रखा जाता है।

यह बाइबल के अनुच्छेद पर निर्भर करता है कि वहां पर उस शब्द का अर्थ क्या है। लूका 16:19-31 के सन्दर्भ में, इस शब्द का मतलब केवल नरक ही हो सकता है।

(1) कई बार "शिओल" या "हेड्स" शब्द (अर्थात अधोलाक) का अर्थ मृत दशा होती है।

शिओल या हेड्स देह और आत्मा के विभाजित होने की दशा को दर्शाते हैं। **अधोलोक के फाटक के रूप में मृत दशा।** बाइबल में अधिकतर मृत्यु की दशा को मृत्यु के *स्थान* या *क्षेत्र* के रूप में सम्बोधित किया गया है। यह बहुत से फाटकों वाले दृढ़ गढ़ के रूप में प्रदर्शित किया गया है, जिसके फाटकों को केवल मसीह ही खोल सकता है(मत्ती 16:18;प्रकाशितवाक्य 1:18)। यह दृष्टिकोण आम तौर पर कब्र को दर्शाता है (अर्थात मिट्टी मिट्टी में मिल जाती है), जिसमें मृत्यु उपरान्त सभी मृतक लोगों की देह को रखा जाता है(सभोपदेशक 3:19-21)।"यहोवा *मारता* है और *जिलाता* भी है, वही *अधोलोक में उतारता* और उस से *निकालता* भी है(1शमूएल 2:6)।" मृतक दशा में अधोलोक में उतरने को हम बाइबल के निम्नलिखित अनुच्छेदों में भी पाते हैं: अय्यूब 14:13-14; 17:13-14;भजन 89:48;होशे 13:14; प्रेरितों 2:27,31; और विशेषतौर पर प्रकाशितवाक्य 6:8; 20:28 में।

बाइबल के कुछ अनुच्छेद,जैसे कि भजन 16:10,30:3, 49:15 और 89:48 आत्मा के अधोलोक में जाने या अधोलोक में रहने के बारे में बात करते हैं। लेकिन यह बात ज्ञात है कि इब्रानी भाषा में, व्यक्ति सर्वनाम "मेरी" का इस्तेमाल "*आत्मा*"(इब्रानी:नेफश) शब्द के साथ किया जाता है, जो कि एक *प्रतीकात्मक बोध* है और "*मेरी या मेरे*" सर्वनाम के समान है। उदारहण के तौर पर, भजन 89:48 में लिखा है,"कौन पुरूष सदा अमर रहेगा? क्या कोई *अपने प्राण को* अधोलोक से बचा सकता है?" इसका अर्थ है "कौन ऐसा व्यक्ति ऐसा है जो *अपने प्राण* को मृत्य या मृत्यु की शक्ति से बचा सकता है?" नीतिवचन 23:13-14 में लिखा है कि यदि आप अपने बच्चे को ताड़ना देते हैं तो आप उसे अधोलोक में जाने से बचा लेते हैं। इसका अर्थ है कि अगर बच्चों को उचित तरीके से ताड़ना दी जाए तो बच्चा नरक में नाश होने या धरती पर रहते हुए मृतक दशा से बच जाएगा।

1."मृत्योपरान्त" अनुभव जिसमें लोग इस बात का दावा करते हैं कि वे स्वर्ग या नरक में गये और फिर स्वर्ग या नरक की स्थिति का वर्णन करने लगते हैं, सब झूठ है! मसीह लोगों के दर्शन या स्वपन में प्रगट होता है। लेकिन केवल यीशु ही जानता है कि स्वर्ग कैसा है(मत्ती 11:27;यूहन्ना 3:13)।

मृत अवस्था को एक अन्धकार और निराशाजनक स्थान के रूप में माना जाता है। पुराने नियम में मनुष्य की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान के सन्दर्भ में परमेश्वर का प्रकाशन अधूरा था। कई लोग मृत अवस्था को, विशेषकर मृत देह के कब्र में सड़ने के अन्तराल को एक अन्धकारमय या दु:खद अवस्था के रूप में देखते हैं। अय्यूब 7:9-10,10:19-22, 16:22 और 17:7-16, में अय्यूब मृत्यु के प्रति अपने दृष्टिकोण को प्रगट करता है। अधोलोक को एक मृत अवस्था के रूप में दर्शाया गया है "जहां से कोई वापस(वर्तमान धरती पर) नहीं आ सकता","जो अन्धकारमय और दु:खद आत्माओं का स्थान है","जहां पर केवल कीड़े और सड़ांद है" और यह एक ऐसा स्थान "जहां पर मृतकों को उनकी योजनाओं, उनकी इच्छाओं और उनकी आशाओं समेत फाटकों के पीछे बन्द कर दिया जाता है।"
अय्यूब 14:7-11 में, अय्यूब अधोलोक को "आशाहीन" स्थान के रूप में प्रगट करता है: पौधे और पेड़ सूख जाते हैं, लेकिन प्रति वर्ष उनमें कलियां फूटती है और नये पत्ते व फूल लगते हैं। लेकिन मनुष्य एक बार मरने के बाद फिर कभी इस धरती पर जीवन प्राप्त नहीं करता। मनुष्य का जीवन सीमित(निर्धारित) है और पेड़ पौधों के विपरीत उसे इस धरती पर केवल एक ही बार जीवन जीने का अवसर प्राप्त है।

लेकिन पुराने नियम में हम मृत्यु के बाद भी जीवन की आशा को देखते हैं। तब, अय्यूब 14:12-17 में अय्यूब अपनी आशा प्रगट करता है। क्या यह सम्भव हो सकता है कि मनुष्य को मरने के बाद जीने का एक और मौका मिल जाए? क्या वास्तव में परमेश्वर मृत्यु के लिए समय नियुक्त करेगा और क्या मनुष्य आकाश के टलने तक न जागेगा? क्या परमेश्वर उसे बुलाएगा, क्या उसे गहरी नींद से जगाएगा और अधोलोक से पुन: जीवित करेगा? और फिर वह परमेश्वर द्वारा नये बनने का इन्तजार करेगा और उसकी अभिलाषा बनी रहेगी। यह एक भविष्यसूचक विचार है जो हम तुरन्त बाद में अय्यूब 14:18-19 में देखते हैं। अय्यूब 16:19-21 और 19:25-27 में हम इस भविष्यसूचक विचार को दोबारा देखते हैं। हालांकि अय्यूब नश्वर प्राणी है, लेकिन वह जानता है कि, उसका छुटकारा देने वाला परमेश्वर जीतिवत है। संसार के इतिहास के अन्त में, परमेश्वर इस वर्तमान पृथ्वी पर खड़ा होगा और हर एक उस बात का हिसाब लेगा जो वर्तमान में सक्रिय है। अय्यूब अपने शरीर में बहुत सी यातनाओं को सहने के बाद,वह परमेश्वर को देह से परे अर्थात आत्मा में देख पाया।

अय्यूब का यह भविष्यसूचक विचार बाइबल की अन्य पुस्तकों में और भी अधिक स्पष्ट दिखाई देता है। वहां पर हम नये नियम के समान मृत्यु के पश्चात भी आनन्दमयी आशाओं को देखते हैं। उदाहरण के तौर पर, हनोक परमेश्वर के साथ चला फिरा और *परमेश्वर ने उसे अपनी उपस्थिति में उठा लिया* (उत्पत्ति 5:22-24)। एलिय्याह बवण्डर के साथ आकाश में उठा लिया गया(2 राजा 2:11)हनोक और एलिय्याह अधोलोक में नहीं गये(इब्रानियों 11:5)! भजन 116:15 में लिखा है "यहोवा के भक्तों की मृत्यु, उसकी दृष्टि में अनमोल है।" धर्मियों की मृत्यु आपत्तियों से बचने के लिए करते, शान्ति व विश्राम में प्रवेश करने के लिए होती है(यशायाह 57:1-2)। मृत्यु के समय मनुष्य की देह वापस मिट्टी में मिल जाती है जहां से वह आयी थी लेकिन मनुष्य का आत्मा परमेश्वर के पास वापस चला जाता है जो मनुष्य को आत्मा प्रदान करता है(सभोपदेशक 12:7)। धर्मी जन की देह को सुरक्षित रखा जाएगा अर्थात, परमेश्वर उसकी देह के अवयवों को पुनरूत्थान के दिन तक सम्भाल कर रखता है। लेकिन उसकी आत्मा(अविनाशी) परमेश्वर की उपस्थिति में आनन्द की भरपूरी का आनन्द उठाएगा(भजन 16:9; 17:15; 49:15;73: 24-26; नीतिवचन 14:32; यशायाह 25:8; दानिय्येल 12:3)।

नये नियम में भी मृत्यु के बाद आशा है। परमेश्वर मृतकों का परमेश्वर नहीं लेकिन जीवितों को अर्थात अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर है(मत्ती 22:23)। पुराने नियम में लोग एक बेहतर देश अर्थात ईश्वरीय देख की तलाश किया करते थे(इब्रानियों 11:13-16)। नया नियम मसीही के आनन्दपूर्ण बाहरी रूप को अधिक स्पष्ट रीति से प्रगट करता और देहमुक्त दशा में आनन्द को उनके विवेक में सिखाता है। उदाहरण के लिए, जब उनकी देह इस धरती पर नाश हो जाती है तो उनकी आत्मा में उनके पास "परमेश्वर की ओर से एक इमारत होती है अर्थात स्वर्ग में एक घर।" जब मसीही लोग अपने देह से मुक्त हो जाते हैं(अपनी देह से अलग हो जाते हैं), तो उन्हें परमेश्वर की ओर से अपना घर प्राप्त हो जाता है(2 कुरिन्थियों 5:1.8; लूका 16:22-25; 23:43;प्रेरितों 7:59;इफिसियों 3:14-15;फिलिप्पियों 1:21,23; 1 थिस्लुनिकियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 6:9,11; 14:13)।

(2) शिओल या हेड्स अर्थात अधोलोक का अर्थ कई बार नरक होता है।

अधोलोक अनन्तकाल के लिए दण्ड दिये जाने का स्थान है।

नरक के रूप में अधोलोक। कई अनुच्छेदों में, मृत्यु और अधोलोक के बीच की समानता को एक वाक्य से बढ़कर एक धमकी और एक चेतावनी के रूप में प्रस्तुत किया गया है(नीतिवचन 5:5,7:27;9:17-18;15:24;23:14)। इसका अर्थ नरक

के बहुत नज़दीक है। उदाहरण के लिए नीतिवचन 15:24 में लिखा है कि बुद्धिमान के लिए जीवन का मार्ग ऊपर की ओर जाता है, इस रीति से वह *अधोलोक* अर्थात *नरक* में पड़ने से बच जाता है। दुष्ट लोगों को अधोलोक या नरक में जाने के दण्ड के द्वारा डराया या धमकाया जाता है। व्यवस्थाविवरण 32:19-22 में, परमेश्वर कहते हैं इस्राएल के मूर्तिपूजा करने के कारण, मेरे कोप की आग भड़क उठी है जो पाताल की तह तक जलती जाएगी। अत: परमेश्वर के क्रोध के आग नरक के रूप में जलती है। भजन संहिता 9:17-18 चेतावनी देते हैं कि दुष्ट जन व जितनी जातियां परमेश्वर से फिर गयी है, वे अधोलोक में जा पड़ेंगी। वे नरक में जाएंग, जहां पर उन्हें धर्मी लोगों के विपरीत अकेला और आशाहीन अवस्था में छोड़ दिया जाएगा। भजन 49:13-15 में लोगों को चेतावनी मिलती है कि जिन लोगों को अपने ऊपर भरोसा हैं ,वे कभी अधोलाक से न बच पाएंगे। अर्थात वे, धर्मी लोगों के समान परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं वरन उसके विपरीत नरक में जाएंगे। दुष्ट जन बिना छुटकारे, बिना आशा के, बिना परमेश्वर की सुन्दर उपस्थिति के नरक में जाएंगे(2 थिस्लुनिकियों 1:9)।

कुछ अनुवादक उदासीन अधोलोक के विचार को त्याग कर इस जटिलता से बचने का प्रयास करते हैं और अधोलोक को दो भागों में विभाजित कर देत हैं: फिरदौस अर्थात धर्मी आत्माओं के रहने का स्थान तथा गेहेन्ना अर्थात दुष्टों की आत्मा का निवास स्थान। जबकि पुराना नियम बताता है कि अधोलोक दुष्टों को दण्ड दिये जाने का स्थान है। और नया नियम फिरदौस की तुलना स्वर्ग से करता है(लूका 23:43;2 कुरिन्थियों 12:2,4)अधोलोक से नहीं । और नये नियम में अधोलोक का अर्थ स्पष्ट तौर पर नरक बताया गया है(मत्ती 11:23-24; लूका 16:23)। लूका 16:23-24, वह स्वार्थी धनी व्यक्ति मरा और दफनाया गया और वह सीधे अधोलोक पहुँच गया, जहां पर उसे यातनाएं हो रही थीं। इन सारी घटनाओं को अगर मद्देनज़र रखा जाये तो केवल दुष्ट लोग ही अधोलोक अर्थात नरक में जाते हैं, क्योंकि धर्मी लोग सभी स्वर्ग में जाते हैं। अत: अधोलोक को कभी भी ऐसे स्थान के रूप में नहीं देखा जा सकता जो दो भागों में विभाजित हो जैसा कि अधोलोक से जुड़े दूसरे सिद्धान्त में बताया गया है।

अधोलोक, शैतान और दुष्टात्माओं के निवासस्थान के रूप में। अधोलोक, *नरक* का ही एक पर्यायवाची शब्द है जिसका अर्थ *विनाश* है(अय्यूब 26:6;नीतिवचन 15:11;27:20)। यह एक ठोस शब्द है, जो विनाश के स्वर्गदूत के लिए इस्तेमाल किया जा ता है, यह वह स्थान है जहां शैतान व उसकी दुष्टात्माएं रहती हैं(प्रकाशित 19:11;प्रकाशितवाक्य 9:1-5; 11:7;17:8; 20:1-3)। इस तरह से "शिओल" अर्थात अधोलोक कभी उदासीन स्थान नहीं हो सकता, जैसा कि अधोलोक सम्बन्धी प्रथम सिद्धान्त में बताया गया है।

(3) शिओल या हेड्स अर्थात अधोलोक का अर्थ कई बार कब्र होता है।

अधोलोक वह कब्र है जिसमें सारे मृत रखें जाते हैं।

शिओल अर्थात अधोलोक शब्द का मूल अर्थ सम्भवत: विनाशकारी स्थान अर्थात नरक ही था, अर्थात दुष्टों के लिए अनन्त विनाश का स्थान। परोक्ष रूप में इस मतलब देह के नाश से भी है, अर्थात कब्र। पुराने नियम के अधूरे प्रकाशन में, अधोलोक शब्द का इस्तेमाल नरक से ज्यादा कब्र के बोध में किया गया है, जबकि नये नियम के सिद्ध प्रकाशन में इसी की समानता में इस्तेमाल किया गया हेड्स अर्थात अधोलोक शब्द कब्र से कहीं ज्यादा नरक के लिए इस्तेमाल किया गया है।

यह कहना कठिन है कि अय्यूब में लिखे इन अनुच्छेदों में(अय्यूब 14:13;17:13;21:13) शिओल अर्थात अधोलोक शब्द का अर्थ मृत दशा है या कब। निम्नलिखित अनुच्छेदों में तो कब्र ज्यादा सम्भावित बोध जान पड़ता है। उत्पत्ति 42:38 में याकूब कहता है कि उसके पुत्र के दु:ख के कारण वह शोक के साथ अधोलोक अर्थात कब्र में उतर जाएगा।(उत्प. 37535;44:29; 1 राजा 2:6.9)। भजन संहिता 88:3 में लिखा है मेरा प्राण अधोलोक के निकट पहुँचा है, अर्थात वह मर रहा है। भजन 6:5 में लिखा है कि मृत्यु के बाद तेरा स्मरण नहीं होता; अधोलोक अर्थात कब्र में कौन तेरा धन्यवाद करेगा? भजन संहिता 49: 6-15 में लिखा है, कि अपने व अपनी सम्पत्ति पर भरोसा रखने वाले लोगों और उनके मानने वालों का परिणाम जो अपनी बातों को सही ठहराते हैं, अधोलोक अर्थात कब्र है, जहां पर उनकी सम्पत्ति की बहुतायत होने के बावजूद भी उनकी देह अन्तत: सड़ जाएगी। परन्तु धर्मी जन का भाग, अर्थात उनका जो परमेश्वर का भय मानते हैं, उन्हें परमेश्वर छुड़ाएगा अर्थात वह उनकी देहों को कब्र में से निकालकर परमेश्वर की उपस्थिति में पहुंचा देगा। हालांकि, पुनरूत्थान से पहले, वरन मृत्यु के समय, "मिट्टी की देह मिट्टी में वापिस मिल जाती है और आत्मा पिता परमेश्वर के पास वापस चली जाती है, जिसने

उसे प्रदान किया था"(सभोपदेशक),इसका मतलब है, कि देह तो कब्र में जाती है लेकिन आत्मा परमेश्वर के पास है(लूका 23:46-53)।

सभोपदेश 9:6.10 भी हमें मृतक अवस्था के बारे में बताता है, खास तौर पर देह की अवस्था के बारे में जो कब्र में गाड़ दी जाती है। इसमें लिखा है कि अधोलोक में, अर्थात कब्र के भीतर मृतक अवस्था में, न तो कोई काम होता है न योजना बनती है न ज्ञान न बुद्धि किसी काम आती है। कब्र में जाने वाला व्यक्ति फिर जीवतों के बीच में कोई काम नहीं कर सकता। मरने के बाद कोई भी जन धरती पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं डाल सकता। जिस तरह से मृतक व्यक्ति संसार में जीवन से अलग हो जाता है ठीक उसी प्रकार एक मृतक व्यक्ति संसार में सारे क्रिया कलापों से भी अलग हो जाता है। प्रेरितों 2:27,31 हमें सिखाता है कि अधोलोक मृतक अवस्था को दर्शाता है, विशेषकर की देह की, जो कब्र में जाकर सड़ जाती है।

निष्कर्ष: उपरोक्त विषयवस्तु के आधार पर, शिओल या हेड्स का अर्थ सम्भवत:

- वह अवस्था हो सकती है जिसमें देह और आत्मा देह के पुनरूत्थान से पूर्व अलग हो जाते हैं।
- देह की वह अवस्था हो सकती है जिसमें देह अपनी आत्मा से अलग कब्र में पड़ी होती है
- मनुष्य की आत्मा की वह अवस्था जिसमें नरक में पड़ी उसकी देह उसकी आत्मा से अलग होती है।

बाइबल का कोई भी अनुच्छेद हमें यह शिक्षा प्रदान नहीं करत है कि सभी मृतकों की आत्माएं मरने के बाद एक ही स्थान पर चली जाती है। धर्मी और दुष्ट दोनों के शरीर कब्र में जाते हैं लेकिन जहां तक इनकी आत्माओं का सवाल है वे दो अलग अलग स्थानों में जाती हैं। मसीहियों(धर्मियों)की आत्माएं स्वर्ग में जाती हैं(सभोपदेश 12:7; 2 कुरिन्थियों 5:8; फिलिप्पियों 1:23;इब्रानियों 12:23), जबकि गैर मसीही लोगों (अधर्मियों) की आत्माएं नरक में जाती हैं(मत्ती 11:23-24;लूका 16:23)।

ख. पापशोधन सिद्धान्त

1.पापशोधन स्थल सिद्धान्त बाइबल के अनुसार नहीं है।

पापशोधन स्थल सिद्धान्त सिखाता है कि मृत्यु के समय केवल उन्हीं मसीहियों की आत्माएं स्वर्ग में जाती हैं जो पूरी तरह से शुद्ध हों। जिन्हें मत्ती 25:46 और फिलिप्पियों में "सन्त" कहा गया है। बाकि सारे मसीहियों की आत्माएं स्वर्ग में जाने से पहले "पापशोधन स्थल" में जाती हैं, अर्थात उस स्थान में जो आग,यातनाओं,पीड़ाओं से भरा होता है। पापशोधन स्थल में, उन्हें एक पाप क्षमा प्रक्रिया से होकर गुजरना होता है, जो उन्होंने इस संसार में रहते हुए किये होते हैं। रोमन कैथलिक कलीसियाओं के अनुसार, पापशोधन स्थल यातना या दण्ड देने का स्थान नहीं है, लेकिन यह शुद्धिकरण व स्वर्ग में प्रवेश करने से पहले तैयारी करने का स्थान है। पापशोधन स्थन में रहने का समय इस बात पर निर्भर करता है कि मृतक व्यक्ति के कितने पापों से उसे अभी भी शुद्धिकरण प्राप्त करने की जरूरत है। पापशोधन स्थल में किसी मृतक व्यक्ति का समय अन्तराल छोटा और उसकी यातनाएं कम भी हो सकती हैं:

- संसार में जीवित कैथोलिक लोगों की प्रार्थनाओं या उनके द्वारा किये गये भले कामों के द्वारा।
- खास तौर पर रोमन कैथोलिक कलीसियाओं में प्रार्थना सभा के दौराने चढ़ाया जाने वाला बलिदान द्वारा
- पोप किसी व्यक्ति को "एक सन्त" के रूप में घोषित कर सकता है।

रोमन कैथलिक लोगों का यह सिद्धान्त बाइबल पर नहीं वरन एक अप्रमाण्ति ग्रन्थ, 2मकाबी 12:42-45 पर आधारित है,जहां लिखा है कि:

40.हर एक सैनिक के कपड़ों की छोर पर उन्हें प्रतिमाओं की कारीगरी मिली.....42. उन्होंने प्रार्थना करती कि उनके ये पाप क्षमा कर दिये जाएं.....43.यहूदा और मकाबी ने चंदा किया और पापबलि के रूप में काफी मात्रा में धन यरूशलेम भेज दिय। 44. उसने यह काम मृतकों के जी उठने को अपने दिमाग में रखते हुए किया। वह मृतकों की ओर से इस पापबलि को लेकर आया, ताकि मृतक अपने पापों से मुक्त हो सके।

हालांकि, मकाबी की पुस्तक का यह खण्ड कुछ ऐसी शिक्षाओं को देता है जो शायद रोमन कैथलिक लोग कभी स्वीकार न कर सकें, खास तौर पर, सैनिकों के पापक्षमा से छुटकारे को जो मूर्तिपूजा के पाप करते हुए मरे(40)!

2.पापशोधन के विरूद्ध बाइबल आधारित तर्क

(1) मृत्यु होने पर सारे मसीही तुरन्त स्वर्ग पहुँच जाते हैं।

सारे (नया जन्म पाये हुए) मसीही "सन्त" है(1कुरिन्थियों 1:2)। बाइबल मसीहियों के प्रस्थान को बहुत से नामों से सम्बोधित करती है। "स्वर्ग" का वह अदभुत स्थान, जहां मसीही लोग मृत्यु पश्चात जाते हैं, "फिरदौस" के नाम से (लूका 23:43), "पिता के घर के नाम से जहां पर रहने के लिए बहुत सा स्थान है"(यूहन्ना 14:2), "महिमा के स्थान के नाम से"(भजन 73:24-25),"मसीह के साथ रहने के स्थान के नाम से"(फिलिप्पियों 1:23) और "परमेश्वर के साथ घर में रहने के नाम से" जाना जाता है और फिलिप्पियों 1:23 के अनुसार, "जीवतों में से प्रस्थान कर जाने" का अर्थ "मसीह के साथ होना है।

(2) कोई भी जन मसीह द्वारा किये गये सम्पूर्ण कार्यों में कुछ और नहीं जोड़ सकता।

मृत्यु होने पर, मसीही जन तुरन्त स्वर्ग चला जाता है क्योंकि मसीह ने उसके पापों को मूल्य पहले ही चुका दिया है। पापशोधन सिद्धान्त मसीह द्वारा उद्धार के निमित्त क्रूस पर पूर्ण किये गये कामों में कुछ जोड़ने का प्रयास करना है। हालांकि,प्रकाशितवाक्य 22:18-19 लोगों को चेतावनी देता है कि वे बाइबल की शिक्षाओं में से न तो कुछ कम करें और न ही कुछ बढ़ाएं। यीशु मसीह विश्वासियों का शुद्धिकरण और धर्मी ठहराने वाला है(1 कुरिन्थियों 1:30)।

पापशोधन सिद्धान्त दूसरे मसीहियों के भले कामों और प्रार्थनाओं को उद्धार प्रदान करने में सहयोग देने वाले माध्यम के रूप में प्रस्तुत करता है। इसके अनुसार प्रार्थना सभाओं में बलिदान चढ़ाना,विशेष सन्तों के भले काम जैसे भले काम भी दूसरे लोगों को उद्धार दिलाने वाले माध्यम ठहरते हैं। हालांकि, इफिसियों 2:8-9 हमें सिखाता है कोई भी अपने भले कामों के द्वारा उद्धार प्राप्त नहीं कर सकता। जबकि रोमन कैथोलिक कलीसियाएं दावा करती हैं कि रोमन कैथोलिक कलीसियाओं के पास मृत्यु और अधोलोक की कुँजियां हैं, लेकिन प्रकाशितवाक्य 1:18 स्पष्ट रूप से हमें सिखाता है कि केवल यीशु मसीह के पास ही वे कुँजियां हैं।

ग.आत्माओ के सोने का सिद्धान्त

1.आत्माओं के सोने का सिद्धान्त बाइबल आधारित नहीं है।

आत्माओं के सोने का सिद्धान्त कहता है कि मृत्यु के बाद आत्माएं पूरी तरह से बेहोशी की अवस्था में पहुँच जाती हैं (जिसे "सोना" भी कहा जाता है)। केवल पुनरूत्थान के समय में आत्माएं फिर से अपने होश में आकर जाग जाती है। आत्माओं के सोने का यह सिद्धान्त अधिकतर "द ऐनिलीशन थिओरी"अर्थात "विनाश के सिद्धान्त" तथा "दूसरा अवसर देने के सिद्धान्त" के साथ ही साथ जुड़ कर आगे बढ़ता है। मृत्यु के पश्चात, देह और आत्माएं दोनों ही कब्र में जाकर पूरी तरह से लुप्त हो जाती हैं। केवल पुनरूत्थान के समय में आत्मा(प्राण)पुन: जागृत हो जाती है और उन्हें निम्नलिखित कारणों से दूसरा अवसर मिलता है:

- पश्चाताप करने का चुनाव करने,उद्धार पाने तथा पूरी तरह नयी देह प्राप्त करने के लिए
- या फिर पश्चातापहीन दशा में रहकर पूरी तरह नाश होने के लिए।

ऐसे झूठे शिक्षकों ने यूहन्ना 11:11 को,"हमारा मित्र,लाज़र, सो गया है;मैं उसको जगाने के लिए वहां जाता हूँ" और 1थिस्लुनिकियों 4:13 "जो सो जाते हैं तुम उनके बारे में अनजान न रहो"अपना आधार बना लिया है। दोनो ही जगहों पर मृत्यु को "सोने" से सम्बोधित किया गया है। इन्होंने अपने सिद्धान्तों को भजन 6:5 और सभोपदेशक 9:10 जेसे अनुच्छेदों पर आधारित किया है, जहां पर मृतकों को बेहोश या अचेत अवस्था से सम्बोधित किया गया है: "क्योंकि अधोलोक में न तो कोई काम न योजना है न ज्ञान न बुद्धि काम करती है।" इन्होंने भी अपने सिद्धान्त 2 कुरिथियों 5:10 और प्रकाशित वाक्य 20 :11-15 जैसे अनुच्छेदों पर आधारित किये हैं, जिसके अनुसार वे लोग कहते हैं कि लोगों की मंजिल केवल न्याय के दिन तय होगी उससे पहले नहीं।

2.आत्माओं के सोने के सिद्धान्त के विरूद्ध तर्क।

(1) बाइबल हमें कभी यह शिक्षा नहीं देती है कि आत्मा(या प्राण) या देह कभी सो जाती है!

बाइबल हमें केवल यह बताती है कि मरने वाला व्यक्ति सो जाता है। यह शब्द सोने वाले व्यक्ति व मृतक की उदासीन अवस्था के चलते बना है और इसे शारीरिक मृत्यु की खबर बताने का आसान तरीका या व्यजंना है।

(2) बाइबल हमें बताती है कि मृतक की आत्मा सचेत होती है।

बाइबल के वे अनुच्छेद जो हमें यह सिखाने का प्रयास करते हैं कि मृतक लोग बेहोश अवस्था में होते हैं, वे केवल इस बात पर जोर देना चाहते हैं मृतक लोग,वर्तमान संसार की किसी भी गतिविधी में भागीदार नहीं हो सकते।उदाहरण के तोर पर, सभोपदेशक 9:5-12 में लिखा है....किस मृतक कुछ नहीं जानता...सूर्य ने नीचे जो कुद गतिविधियां हो रही हैं उनमें वे कुछ भागीदारी नहीं कर सकते.....क्योंकि अधोलोक अर्थ कब्र में जहां तू जाने वाला है, न काम न युक्ति न ज्ञान और न बुद्धि है" अत: मृत्यु के पश्चात मज़दूर काम नहीं कर सकता, गायक गीत नहीं गा सकता और न राजा धरती पर राज्य कर

सकता है। अत: बाइबल हमें बताती है कि मृत्यु के पश्चात हमारे देह कब्र में पड़ी रहती है, लेकन आत्मा धरती पर होने वाले सारे कार्यो के प्रति अबोध हो जाती है। (यशायाह 63:16)

हालांकि, बाइबल हमें यह भी सिखाती है कि जिस समय हमारी देह कब्र में होती है, हमारी आत्मा(प्राण) स्वर्ग व नरक में होने वाली सारी गतिविधियों के प्रति अति सचेत होती है! उदाहरण के लिए, लूका 16:22-28 में लिखा है कि जब वह स्वार्थी धनी व्यक्ति मरा और उसे गाढ़ा गया, तो उसने अपनी आंखे सीधे नरक में जाकर खोली जहां पर उसे यातनाएं मिल रही थीं। और इब्रानियों 12:22-24 व प्रकाशित वाक्य 6:9-10 कहता है कि जब मसीही मरते हैं तो वे त्रिएक परमेश्वर व उनसे पहले मरे हुए सारे मसीहियों के साथ सचेत संगति का आनन्द उठाते हैं।

(3) न्याय के दिन,लोगों के मंजिल तय नहीं, घोषित होती है।

लोगों की मंजिल धरती पर रहते हुए यीशु के साथ उनके सम्बन्धों के आधार पर तय होती है। यीशु ने यूहन्ना 3:18,36 में कहा," परन्तु जो कोई उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिए कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।""परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन का नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" मत्ती 25 और 2 थिस्लुनिकियों 1 के अनुसार लोगों की मंजिल धरती पर रहते हुए यीशु के साथ उनके सम्बन्धों के आधार पर तय हो जाती है। मत्ती 25:14-30 में तोड़ों के दृष्टान्त के अनुसार, हर एक व्यक्ति का प्रतिफल या उसका दण्ड उसके मरने से पहले और यीशु के दूसरे आगमन से पहले ही तय हो जाता है।

इसलिए मृत्यु के बाद उद्धार या छुटकारा पाने का कोई दूसरा अवसर भी नहीं मिलेगा। मत्ती 25:34,41 और 2 थिस्लुनिकियों 1:5-10 के अनुसार,न्याय के दिन केवल स्वर्गदूतों और इस दुनिया में पैदा हुए सभी लोगों के सामने परमेश्वर के निर्णय और परमेश्वर के न्याय और उसकी महिमा की घोषणा होगी! अन्तिम न्याय में जिस बात को लेकर लोग हैरान होते हैं वह न्याय से ज्यादा न्याय का वह आधार होता है जिस पर न्याय होता है। अन्तिम न्याय का आधार परमेश्वर का अनुग्रह है, जो "मसीह के भाई बहनों पर"(दूसरे मसीहियों पर)दया करने की ओर हमारी अगुवाई करता है(मत्ती 12:50; इब्रानियों 2:11-12)(मत्ती 25:34-40)। उनके दोषी ठहरने का आधार कारण यह है कि उन्होंने मसीहियों पर दया नहीं की(मत्ती 25:41-45)।

घ. विनाश के सिद्धान्त

1. विनाश के सिद्धान्त बाइबल पर आधारित नहीं है।

(1) विनाश के सिद्धान्त [2]

विनाशवादी सिद्धान्त सिखाता है कि मृत्यु के पश्चात, देह और आत्मा (या प्राण) दोनों ही नाश हो जाते हैं। देह और प्राण दोनो ही कब्र में डाल दिये जाते हैं जिनका बाद में कोई अस्तित्व नहीं होता। पुनरूत्थान के समय में किसी प्रकार का पुन: जीवित होना या होश में आना नहीं होता, वरन नयी देह और नयी आत्मा प्राप्त होती है।

विनाशवादी सिद्धान्त सिखाता है कि मृत्यु के बाद दुष्ट का कोई अस्तित्व पूरी तरह से खत्म हो जाता है इसी कारण कोई नरक नहीं है और न हीं यातना देने का कोई स्थान है। क्योंकि दुष्टों को हमेशा के लिए नाश कर दिया जाता है।

विनाशवाद हमें यह भी शिक्षा देता है कि मृत्यु के पश्चात धर्मी का अस्तितव भी मिट जाता है इस कारण मृत्यु और पुनरूत्थान के बीच में कोई अवस्था बाकि नहीं है। पुनरूत्थान के समय में केवल धर्मी जन को ही नयी देह और नयी आत्मा प्राप्त होती है।

वे शिक्षा देते हैं कि परमेश्वर ने सबको नश्वर बनाया है, लेकिन मनुष्य विश्वास, आज्ञाकारिता और शुद्धिकरण के द्वारा अमर हो सकता है। पश्चाताप रहित पापी नाश होगा।

जबकि बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर ने सभी प्राणियों को अमर बनाया था लेकिन उन्होनें अनाज्ञाकारिता के कारण अपनी अमरता को खो दिया। पाप में गिरते ही परमेश्वर ने मनुष्यों से अमरता को दूर कर दिया। लेकिन जो लोग परमेश्वर की ओर फिरते हैं वे अनन्त जीवन पाते हैं,लेकिन जो लोग पश्चाताप नहीं करते वे अनन्त दण्ड पाते हैं(मत्ती 25:46),जो कि विनाश से थोड़ा अलग होता है।

(2) विनाशकारी (destruction) **सिद्धान्त ।**

उन्होंने विनाश को "समाप्त करने" में अनुवाद किया है, जिसका अर्थ, पूरी तरह से विवेक और सम्पूर्ण अस्तित्व का नाश होना। कुछ अुनयायियों का मानना है कि दुष्ट लोग अपने पापों के लिए कुछ सीमित समय तक यातनाएं व तकलीफें सहने

के बाद नाश कर दिये जाते हैं। अन्य अनुयायियों के अनुसार, दुष्टों को तुरन्त ही नाश कर दिया जाता है। उनके सिद्धान्त निम्नलिखित मतों पर आधारित होते हैं:

- तथ्य कि केवल *परमेश्वर* की अमर है
- विश्वासियों को अनन्त जीवन *दिया गया* है
- कि अविश्वासी *नाश* किये जाएगें, दूसरे शब्दों में वे कहते हैं कि अविश्वासियों का *वजूद खत्म* हो जाएगा।

2. विनाशकारी सिद्धान्तों के विरूद्ध बाइबल के तर्क ।

(1) परमेश्वर सदा से अमर है, लेकिन मसीहियों को अमरता प्रदान की गयी है।

परमेश्वर अमर है। 1 तीमुथीयुस 6:16, परमेश्वर "ही केवल अमर है",अर्थात वह आदि से ही अमरता या अनश्वरता धारण किये है। परमेश्वर कभी मर नहीं सकता।

परमेश्वर ने मनुष्य को अमर बनाया है। प्रथम मानव अर्थात आदम और हव्वा को अमर बनाया गया था। वे परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गये थे(उत्प. 1:27), और यह सिद्ध अवस्था बदलकर सड़न और नश्वर अवस्था बन गयी। सृष्टि के समय परमेश्वर ने "मनुष्य के हृदय में अमरता को रखा था"(सभोपदेशक 3:11)। उनकी देह और आत्मा दोनो ही अमर बनाये गये थे। परमेश्वर चाहते थे कि मनुष्य हमेशा उसकी उपस्थिति में बना रहे! लेकिन आदम और हव्वा को अमरता इस तरह से नहीं दी गयी थी कि वे न मरें। अर्थात यदि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया तो वे अपनी अमरता को खो बैठेंगे और मर जाएगें(उत्पत्ति 2:15-17)। उत्पत्ति 3 वर्णन करता है कि किस प्रकास से वे मृत्यु का शिकार बन गये।

पुनरूत्थान के समय, मसीही जन अमर हो जाएंगे। पुनरूत्थान के समय, शरीर नाशमान दशा में बोया जाएगा और *अविनाशी दशा* में जी उठेगा(1कुरिन्थियों 15:42,50)। इसका अर्थ है कि पुनरूत्थान के समय,मनुष्य *अमरता* को प्राप्त कर लेगा। मसीही जन नहीं मर सकते और भविष्य में भी नहीं मरेंगे। केवल मसीहियों को ही "अमर" कहा जाता है, क्योंकि उन्हीं के पास अनन्त जीवन है और उन्हें ही अनन्त तक अपनी देह और आत्मा से परमेश्वर की महिमा करने के लिए बनाया गया है। मसीही लोग ही सिद्ध व अनन्त जीवन के वारिस हैं, जिन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में अनन्ता के लिए आशीषित किया गया है।

(2) आत्मा निश्चय ही मृत्यु में बनी रहती है।

निर्गमन 3:6 में परमेश्वर ने मूसा से कहा,"मैं तेरे पिता का परमेश्वर, और इब्राहीम का परमेश्व, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ।" यीशु के अनुसार,"परमेश्वर मुर्दों का नहीं वरन जीवतों को परमेश्वर है(मत्ती 22:32)"। जब अब्राहम और इसहाक और याकूब मरे, तो उनका *अस्तित्व खत्म नहीं हुआ*। हालांकि उनकी देह अभी कब्र में पड़ी हैं और पुनरूत्थान के दिन जी उठेगी, लेकिन उनकी आत्मा अभी भी विद्यमान और जीवित है। परमेश्वर मुर्दों का नहीं वरन जीवतों का परमेश्वर है। अत: मृत्यु के समय, मनुष्य की आत्मा नहीं नहीं मरती,वरन मृत्यु से पार होकर लगातार विद्यमान व जीवित रहती है।

(3) शरीर निश्चय ही भविष्य के जीवन का भाग होगा।

उत्पत्ति 3:19 के अनुसार,मृत्यु में, देह मिटटी में मिल जाती है(प्रेरितों 2:29-31)। लेकिन "मिट्टी" कोई अविद्यमान वस्तु नहीं है! यूहन्ना 5:28-29, प्रेरितों 24:15 और प्रकाशितवाक्य 20:12-15 स्पष्ट तौर पर शिक्षा देता है कि यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर लोगों के शरीर दुबारा से रचे नहीं जाएंगे, वरन वे मिटटी में से ही पुर्नजीवित हो जाएगें। धर्मी और दुष्टों दोनों के ही शरीर मृतकों में से जी उठेगें।

बाइबल में ऐसा कोई तथ्य प्रस्तुत नहीं किया गया है जो हमें यह बताता हो कि धर्मी और दुष्ट लोग एक साथ नहीं जी उठेंगे। बाइबल हमें यीशु मसीह के आगमन पर एक सामान्य पुनरूत्थान को बताती है।

1 कुरिन्थियों 15: 35-42 और फिलिप्पियों 3:21 बताते हैं कि मृतक मसीहियों से जुड़ी हर वस्तु रूपान्तरित हो जाएगी जिससे उनकी पुर्नजीवित देह यीशु की महिमित देह के समान हो जाएगी। पुनरूत्थान में नयी देहों की रचना नहीं होगी, परन्तु उनकी मूल देह का ही महिमित रूपान्तरण हो जाएगा। इस तरीके से लोगों को पुनरूत्थान के बाद भी पहिचाना जा सकेगा जैसे कि यीशु को पहिचाना जा सकता है(यूहन्ना 20:24-29)।

मत्ती 25:46 हमें सिखाता है कि अन्तिम न्याय के बाद, धर्मी और दुष्ट लोग लगाता बने रहेंगे। अत:, मृत्यु होने पर, मनुष्य की देह और उसकी आत्मा कुछ भी अविद्यमान नहीं होता। इसी प्रकार से पुनरूत्थान व अन्तिम न्याय के दिन भी मनुष्य की आत्मा और मनुष्य की देह अविद्यमान या मरती नहीं है।

(4) अमरता या लगातार अस्तित्व में बने रहना अनन्त जीवन के समान नहीं है।

अनन्त जीवन वास्तव में परमेश्वर की ओर से एक वरदान है, जो केवल धर्मी लोगों को अर्थात केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले लोगों को ही दिया जाता है। लेकिन जब दुष्ट लोगों को अनन्त जीवन नहीं दिया जाता है तो इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि उनका बजूद खत्म हो जाएगा।

यूहन्ना 5:28-29 व प्रेरितों 24:15 के अनुसार, मसीहियों और गैर मसीहियों के शरीर एक ही समय में जी उठेंगे। और मत्ती 25:46 के अनुसार, केवल मसीहियों को ही अनन्त जीवन प्राप्त होगा, लेकिन गैर मसीहियों को अनन्त दण्ड मिलेगा। बाइबल हमें शिक्षा देती है कि दोनो ही प्रकार के लोग लगातार अस्तित्व में बने रहेगें। धर्मी जन अनन्त जीवन का आनन्द मनाएंगे। और दुष्ट लोगों को अनन्त दण्ड मिलेगा(मत्ती 25:46;2 थिस्लुनिकियों 1:9)।

(5)"विनाश" शब्द का अर्थ समाप्त या खत्म होना या अस्तित्वहीन हो जाना नहीं है।

मनुष्य से जुड़े हुए शब्दों अर्थात मृत्यु,विनाश और दण्ड को मतलब अस्तित्वहीन हो जाना नहीं है। 1कुरिन्थियों 5:5 के अनुसार, देह के नष्ट हो जाने का अर्थ समाप्त हो जाना नही है। इसका अर्थ है कि "देह के विनाश द्वारा" "दण्ड"। इसका अर्थ है कि,"इस मनुष्य को शैतान के हाथों में सौंप दिया जाए, ताकि इसका पापमय स्वभाव समाप्त हो जाए और उसकी आत्मा परमेश्वर के दिन में बच जाए।" कलीसिया एक पापी को इस आशा के साथ उसके पापमय स्वभाव को नष्ट करने के लिए शैतान के हाथ में अर्थात भयंकर बीमारी या कष्टों के हाथ में सौंपती है ताकि उसकी आत्मा न्याय की दिन में बच जाए। शैतान केवल मनुष्य पापमय स्वभाव के कारण ही उसे नुकसान पहुंचा सकता और उसे दण्ड दे सकता है। लेकिन केवल मसीह ही मनुष्य के पापमय स्वभाव का अपने उद्धार के कामों द्वारा अन्त कर सकता है।

2 थिस्लुनिकियों 1:8-9 के अनुसार, अन्तिम न्याय के दिन विनाश,अस्तित्वहीन होने के बिल्कुल विपरीत है। जहां पर दुष्टों को अनन्त नाश या अनन्त दण्ड के द्वारा सज़ा दी जाती है, जिसका अर्थ है कि उन्हें हमेशा के लिए परमेश्वर की उपस्थिति व उसकी सामर्थ्य की तेजस्वी महिमा से अलग कर दिया जाता है।

परमेश्वर इन लोगों से बदला लेगा या उन्हें दण्ड देगा(पद 8), अर्थात इन लोगों को परमेश्वर के प्रेम,दया और का अनुभव करने से वंचित कर दिया जाएगा, उन्हें यीशु मसीह के महिमामय और अद्‌भुत तेज को देखने से अलग कर दिया जाएगा। प्रकाशित वाक्य 20:10 व 21:8 के अनुसार दूसरी मृत्यु का मतलब उस स्थान में फेंक दिया जाना है जहां पर दुष्टों को आग की झील में रात और दिन हमेशा हमेशा के लिए यातनाएं दी जा रही है।

ड.दूसरे अवसर का सिद्धान्त

1.दूसरे अवसर का सिद्धान्त बाइबल पर आधारित नहीं है।

(1) दूसरे अवसर का सिद्धान्त सिखाता है कि मनुष्य की शारीरिक मृत्यु के बाद भी मसीह के द्वारा उद्धार सम्भव है

इस सिद्धान्त को मानने वाले विश्वास करते हैं कि उन लोगों के पास अभी भी विश्वास में आने का अवसर है जिन्हें:

- अपने जीवनकाल में कभी भी सुसमाचार सुनने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ है।
- जिन लोगों ने उचित तरीके से मसीह के दावों को नहीं समझा या उन्होंने ध्यान नहीं दिया
- जो शिशु अवस्था में ही मर गये।

उनका कहना है कि कोई भी जन नरक का दण्ड तब तक नहीं पाएगा जब तक कि सबको सुसमाचार सुनने और विश्वास करने का उचित अवसर न मिल जाए। इसलिए उन लोगों का निष्कर्ष यह है कि मनुष्य की अनन्त अवस्था शारीरिक मृत्यु और न्याय के दिन तक ही सीमित नहीं है।

(2) उन्होंने अपने सिद्धान्त को परमेश्वर के प्रेम और न्याय के प्रति मानवीय समझ पर आधारित किया है।

वे निम्नलिखित वचनों का हवाला देते हैं:

- यूहन्ना 3:18,36, जिसमें उनकी समझ के अनुसार केवल वह व्यक्ति ही दण्ड का हकदार है जिसने *जानबूझकर विश्वास न किया हो।*

- वे 1पतरस 3:19 और 4:6 का हवाला देते हैं जिसमें उनकी समझ के अनुसार यह लिखा है कि मसीह अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान और कें बीच अधोलोक में गया और उसने *वहां बन्दी आत्माओं को जाकर सुसमाचार प्रचार किया।*
- वे अपने सिद्धान्त का आधार 2 कुरिन्थियों 5:10 और प्रकाशितवाक्य 20:11-15 को भी बताते हैं, जिसमें उनके अनुसार लिखा है कि *लोगों की मंजिल केवल अन्तिम न्याय के दिन ही तय होगी।*

2. दूसरे अवसर के सिद्धान्त के विरूद्ध बाइबल का तर्क।

(1) मनुष्य के जीवन की मंजिल मनुष्य के विश्वास और विश्वासपूर्ण जीवन के आधार पर तभी तय हो जाती है जब वे धरती पर जीवित होते हैं।

धरती पर रहते हुए मनुष्य के काम और उसका जीवन उसकी अनन्त मंजिल को तय कर देता है। यूहन्ना 3:18-21,36 में हमें शिक्षा मिलती है कि लोगों की अनन्त मंजिल धरती पर रहते हुए यीशु मसीह के साथ उनके रिश्ते के आधार पर तय हो जाती है। यूहन्ना 3 हमें यीशु मसीह के आगमन और उसके आने पर वर्तमान संसार में लोगों द्वारा किये जाने वाले व्यवहार के बारे में बताता है। यीशु सिखाते हैं कि जो काई उस पर विश्वास नहीं करता है वह पहले से ही दोषी ठहर चुका है। यीशु सिखाते हैं कि जो कोई उसे अस्वीकार करता है वह जीवन को नहीं देख सकता, क्योंकि परमेश्वर का क्रोध उसमें बना रहता है।

लोगों का अनन्त जीवन इस तथ्य पर निर्भर करता है कि उसने इस संसार में रहते हुए किस प्रकार का जीवन व्यतीत किया है। मत्ती 7:22-23,10:32-33 और 25:31-46, सिखाते हैं कि इस धरती पर रहते हुए परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना,धरती पर रहते हुए यीशु को लोगों के सामने मान ग्रहण कर लेना और मसीह के भाई बहनों के साथ कृपा व भलाई के काम, धरती पर लोगों की अनन्त मंजिल को तय करते हैं। हालांकि, लोग भले कामों की वजह से नहीं वरन परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की वजह से उद्धार पाते हैं। परमेश्वर की इच्छा यह है कि लोग यीशु मसीह पर विश्वास करके उसे अपना एकमात्र उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करें(यूहन्ना 6:29)। और उनके काम इस बात को प्रगट करेगें कि उनका विश्वास सच्चा है कि नहीं(याकूब 2:14-22)। यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर लोगों को मिलने वाली प्रशंसा और प्रतिफल या दोष और दण्ड इस बात पर निर्भर करेगा कि इस धरती पर रहते हुए उसने अपनी योग्यताओं और अवसरों के साथ क्या किया (मत्ती 25:21,30;2 कुरिन्थियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 20:11-15)। न्याय के दिन लोगों को यीशु मसीह पर विश्वास करने का दूसरा मौका नहीं मिलेगा, वरन उस दिन अनन्त मंजिल की सार्वजनिक तौर पर घोषणा कर दी जाएगी। लोगों की अनन्त मंजिल लोगों के विश्वास और धरती पर बिताए विश्वासपूर्ण जीवन पर निर्भर करती है।

(2) विश्वासियों का मृत्यु के पश्चात अनन्त स्थान या पद पहले ही तय हो चुका है।

यीशु सिखाते हैं कि परमेश्वर अधर्मियों को उनकी मृत्यु के पश्चात तुरन्त दण्ड देता है(लूका 16:19-23)। प्रेरित पतरस सिखाता है कि परमेश्वर अधर्मियों को लगातार दण्ड देता है लेकिन अन्तिम निर्ण को न्याय के दिन के लिए रख छोड़ा है। अधर्मियों को विशेष उद्देश्य और विशेष समय के लिए निर्धारित किया गया है। उनकी शारीरिक मृत्यु के बाद उनका दण्ड लागातार उन पर पड़ता है और वे न्याय के दिन तक तकलीफें सहते रहते हैं(2 पतरस 2:9)। न्याय के दिन के बाद उनकी तकलीफें और अधिक बढ़ जाती है। इसके बाद उन्हें और भी अधिक लज्जा का सामना करना पड़ेगा जब धरती पर जीवन यापन करने वाले सारे लोगों के सामने सार्वजनिक तौर पर उनकी सज़ा सुनाई जाएगी। वे अपनी आत्मा में ही नहीं वरन अपनी देह में भी नरक ही यातनाओं को सहेगें(मत्ती 10:28;25:41,46)। वे हमेशा के लि परमेश्वर के प्रेम और उसकी देखरेख से वंचित हो जाने के कष्ट को सहेगें(2 थिस्लुनिकियों 1:8-10)। घोर अन्धकार अधर्मियों के लिए "लगातार आरक्षित किया जा रहा है"(यहूदा 7-11)।

(3) दूसरे अवसर का सिद्धान्त ज्यादातर लोगों के लिए सुमाचार न सुनाने के लिए एक बहाना है।

यह सुसमाचार प्रचार करने से आपातकालीन परिस्थिति को चुरा लेता है। चाहे लोग विश्वास करें या न करें लेकिन सुसमाचार अवश्य ही प्रचार किया जाना चाहिए(मरकुस 16:15-16)। यीशु के आगमन से पूर्व सारे संसार में गवाही के तौर सुसमाचार सुना दिया जाएगा(मत्ती 24:14)।

(4) लोगों के मृत होने के बाद निश्चय ही उन्हें किसी तरह सुसमाचार प्रचार नहीं किया जा सकता।

दो अनुच्छेद, 1 पतरस 3:18-22 और 1 पतरस 4:1-6,में समान विषय के बारे में बात नहीं की गयी है अत: इन दोनों अनुच्छेदों को दूसरे अवसर के सिद्धान्त के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। न हीं ये अनुच्छेद सुझाव देते हैं कि लोगों

को मरने के बाद सुसमाचार प्रचार किया जा सकता है। इन दोनों ही अनुच्छेदों का गलत तरीके से इस्तेमाल किया जाता है इसलिए हम इनका विस्तृत वर्णन अलग से करेंगे।

3.1पतरस 3:18-22 और 1 पतरस 4:1-6 पर आधारित दूसरे अवसर का सिद्धान्त।

(1) अधोलोक में जाकर लोगों को सुनाना।

दूसरे अवसर के सिद्धान्त के अनुसार, 1पतरस 3:18-22 कहता है कि उसकी मृत्यु और उसके पुनरूत्थान के बीच में,यीशु की आत्मा बन्दीगृह में गयी,जिसे हेड्स अर्थात अधोलोक के रूप में जाना जाता है। हेड्स को अधोलोक कहा जाता है,अर्थात यीशु मसीह के प्रथम आगमन से पहले इस दुनिया में जीवन यापन करने वाले लोगों का निवास स्थान।

(2) सुसमाचार प्रचार करना।

दूसरे अवसर के सिद्धान्त के अनुसार, 1पतरस 4:6 कहता है कि यीशु ने अधोलोक में जाकर बन्दी आत्माओं में सुसमाचार सुनाया ताकि उन्हें उद्धार पाने का एक अन्तिम अवसर मिल सके।

(3) सही मतलब।

1 पतरस 3:18-22 यीशु मसीह के *अधोलोक में जाने के बारे में बात नहीं करते* हैं,वरन मसीह के विजय के साथ में *स्वर्ग में जाने की* बातें करते हैं। यह अनुच्छेद सुसमाचार प्रचार के बारे में नहीं बात करता,वरन आज्ञा न मानने वालों पर अपनी निर्णायक विजय के बारे में बताता है।

1 पतरस 4:1-6 *मृतकों में* सुसमाचार सुनाने के बारे में बात नहीं करते, वरन बताते हैं कि *जब वे लोग इस संसार में जीवित थे* तब ही उन्हें सुसमाचार सुना दिया गया था।

अत: दूसरे अवसर का सिद्धान्त बाइबल आधारित नहीं है।

4. 1 पतरस 3:18-22 का सही अर्थ

1 पतरस 3:18-22 में मसीह के स्वर्ग में विजयी स्वर्गारोहण का वर्णन किया गया है। उसका स्वर्गारोहण ही अपने आप में सारे जगत में उसकी विजय की घोषणा है!

(1) पद 18 में मसीह की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान के माध्यम से उसके प्रायश्चित व उसके मेल मिलाप का वर्णन किया गया है।

जब यीशु मरा, तो केवल उसका मानवीय स्वभाव ही मरा। उसे "मार दिया गया" का अर्थ है कि जब वह अपने मानवीय शरीर की कमजोरियों को धारण किये हुए और अपने ऊपर सम्पूर्ण मानवजाति के पापों के बोझों को उठाये हुए था उसे मार दिया गया(रोमियों 1:3)। उसकी मृत्यु के द्वारा यीशु ने अपने कमज़ोर मानव स्वभाव को दूर कर दिया पाप और मृत्यु के साथ कड़ा रूख अपनाया। अपनी मृत्यु के समय, यीशु ने अपनी आत्मा को परमेश्वर पिता के हाथों में सौंप दिया(लूका 23:46)। अत: जब यीशु मरा,उसकी देह तो कब्र में रखी गयी परन्तु उसकी आत्मा परमेश्वर पिता की उपस्थिति में थी। हम बाइबल में कहीं पर भी यह नहीं पड़ते कि यीशु की आत्मा अधोलोक में गयी जिसे लोग नरक भी कहते हैं।

जब यीशु मसीह का पुनरूत्थान हुआ तो केवल उसके मानवीय स्वभाव का पुनरूत्थान हुआ। वह"आत्मा के द्वारा जिलाया गया" का अर्थ है कि उसकी मानवीय देह पवित्र आत्मा के द्वारा जिलायी या पुनरूत्थित की गयी(अर्थात उसके ईश्वरीय स्वभाव के द्वारा)(यूहन्ना:17-18)।

उसके पुनरूत्थान के बाद, उसकी देह एक महिमित व पूरी तरह से पवित्र आत्मा द्वारा नियन्त्रित देह थी(रोमियों 1:4;कुलुस्सियों 2:9)! उस क्षण के बाद से यीशु, अपने मानवीय स्वभाव की सीमाओं के हिसाब से शारीरिक कमजोरियों में जीवन नहीं, वरन पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में जीन व्यतीत करने जा रहे थे। उस क्षण से बाद से परमेश्वर के अतुल्य सामर्थ्य ने यीशु को परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर और जगत की सारी शक्तियों में शिरोमणी ठहरा दिया(मत्ती 28:18; 1 कुरिन्थियों 15:25; इफिसियों 1:20-23; फिलिप्पियों 2:9-11; प्रकाशितवाक्य 1:5)।

(2) पद 19-20 मसीह के "जाने" और उसके "प्रचार" के बारे में बातें करते हैं।

यीशु मसीह का "जाना" **उसके पुनरूत्थान से पहले नहीं था *वरन उसके पुनरूत्थान के बाद जाना था ।*** पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से जिलाये गये थे और उसी अवस्था में वह कहीं गया और उसने जाकर प्रचार किया।

पद 18-19 के अनुसार, यीशु मसीह का "जाना" यीशु की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान के बीच में जाना नहीं था। उसका जाना पुनरूत्थान से पूर्व यीशु की मानवीय आत्मा में जाना नहीं था वरन उसका जाना पुनरूत्थान के पश्चात महिमित देह में जाना था।

यीशु मसीह का प्रस्थान धरातल की ओर नहीं वरन स्वर्ग की ओर था। पद 22 में लिखा है कि यीशु मसीह अधोलोक में नहीं गये थे जहां पर सभी मृतकों का निवास स्थान है वरन वह तो परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर ऊपर की ओर गये।

यूहन्ना 12:32 में पुनरूत्थान,स्वर्गारोहण और यीशु का विराजमान होने को इस तरह से दर्शाया गया है जैसे किसी को "परमेश्वर के पास" उठा लिया गया हो।

प्रकाशितवाक्य 12:5 में पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण को और उसके सिंहासन पर विराजमान होने को इस तरह से दर्शाया गया है मानों किसी को "छीनकर" पहुंचा दिया गया हो।

इसी तरह से 1 पतरस 3:19-22 में उसके पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और सिंहासन में विराजमान होने को स्वर्ग में विराजमान परमेश्वर के पास "जाने के" में दर्शाया गया है।

"यीशु मसीह का प्रचार करना सुसमाचार प्रचार करना नहीं था, वरन अपनी विजय का प्रचार करना था। पद 19 में साधारण: "प्रचार" करने के बारें में बात करता है। लेकर उसके प्रचार की विषयवस्तु क्या थी। मूल भाषा में "जाना" और "प्रचार करना" दोनों एक ही कहानी के दो भाग हैं। "उसने जाकर उन कैदी आत्माओं को खबर सुनाई जो पहले मर चुके थे। उसकी विजयी स्वर्ग की यात्रा (उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान के बाद) ही अपने आप में उसकी अन्तिम विजय की उदघोषणा थी। पद 19 सुसमाचार प्रचार के बारे में बातचीत नहीं करता है वरन वह वचन विजय के साथ मसीह के स्वर्गारोहण के बारे में बात करता है।

मसीह का "जाना" सारे लापरवाह और अनाज्ञाकारी लोगों के लिए एक सीधी चेतावनी जैसी थी।

पद 19-20 में लिखा है कि उसकी विजय की उदघोषणा विशेष तौर पर "उन कैदी आत्माओं के लिए थी जिन्होंने नूह के समय में परमेश्वर की आज्ञा को नहीं माना जब नाव तैयार की जा रही थी"। वे आत्माएं कौन हैं जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी? ये वे उन लोगों की देहमुक्त आत्माएं हैं जो जलप्रलय में नष्ट हो गयी थी और जिन्हें नरक में कैद करके रखा गया है। उत्पत्ति 6:5 में लिखा है कि वे एक दुष्ट पीढ़ी थी और 2 पतरस 2:5 में लिखा है कि नूह एक धार्मिकता का प्रचारक था। नूह ने परमेश्वर की बातों पर विश्वास करके नाव बनाना शुरू कर दिया, लेकिन इन भक्तिहीन लोगों ने जलप्रलय के द्वारा भविष्य में होने वाले परमेश्वर न्याय को लेकर उसका बहुत मज़ाक बनाया था। उन्होंने न तो नूह के प्रचार पर विश्वास किया बल्कि नाव के बनाये जाने पर भी ध्यान नहीं दिया, जो उनके आने वाले विनाश का एक प्रत्यक्ष चिन्ह था। उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया और लगभग सौ वर्षों तक उसके क्रोध दिलाते रहे(1 पतरस 3:20;उत्पत्ति 5:32;6:3;7:6)। लेकिन जब जलप्रलय आया तब, नूह अपने विश्वास के कारण बच गया जबकि दुष्टों को अपने अविश्वास का दण्ड मिला(इब्रानियों 11:6)।

मत्ती 24:37-39 के अनुसार, यीशु स्वयं शिक्षा देते हैं कि "नूह के समय के लोग" संसार भर के लापरवाह और अनाज्ञाकारी लोगों के प्रतीक हैं।अत: यीशु मसीह का स्वर्गारोहण लावरपाह,अनाज्ञाकारी और अधर्मी लोगों के लिए एक उदघोषणा है, चाहे वे यीशु मसीह के प्रथम आगमन से पहले इस धरती पर पैदा हुए हों या बाद में।

इसके अलावा यह लोगों के लिए पश्चाताप करने हेतू चेतावनी भी है। बाइबल के अन्य अनुच्छेदों से हम जानते हैं कि मसीह की मृत्यु,पुनरूत्थान,स्वर्गारोहण और सिहांसन पर विराजमान होना दुष्ट की शक्तियों पर विजय की घोषणा है (इफिसियों 1:20-22),उदाहरण के लिए शैतान और उसकी दुष्टात्माएं(यूहन्ना 12:31-32; प्रकाशितवाक्य 12:5-9; 20:1,3,7), बुरी आत्माएं(पतित स्वर्गदूत)(लूका 8:31; कुलुस्सियों 2:15; 2पतरस 2:4;यहूदा 6; प्रकाशितवाक्य 9:1)और संसार में पायी जाने वाली सारी सत्ता(भजन संहिता 2:8-12)!यीशु मसीह का स्वर्गारोहण उसकी सम्पूर्ण विजय की उदघोषणा है।

(3) पद 21-22 यीशु मसीह के पुनरूत्थान.स्वर्गारोहण और सिंहासन पर विराजमान होने का दर्शाता है।

एक रोमी कप्तान जब विजय प्राप्त करके कदमताल करते हुए रोम में वापस आता है, तो उसके गुलाम रथों से जंज़ीरों में बंधे हुए कतार में उसके पीछे पीछे आते हैं, यही तस्वीर यीशु मसीह के स्वर्गारोहण को दर्शाती है, जिस में उसके गुलाम उसके पीछे पीछे हो लेते हैं।

2 कुरिन्थियों 2:14 और इफिसियों 4:8 के अनुसार यीशु मसीह अपने साथ इतिहास के सारे मसीहियों को अपने साथ बाहर निकाल लाएं। जैसा कि सुसमाचार में बताया गया है उसने उन्हें अपने प्रेम और अनुग्रह से जीत लिया है। सबसे पहले यीशु परमेश्वर को प्रगट करने तथा लोगों के पापों का प्रायश्चित करने के लिए स्वर्ग से उतरकर धरती के सबसे निचले स्थान पर आये(उसने कमजोर और मरनहार मनुष्य का रूप धारण किया)। उसके बाद वह सब बातों को परिपूर्ण करने के लिए, स्वर्ग के सर्वोच्च स्थान पर विराजमान हो गया(अब वह महिमित मानवीय स्वभाव धारण किये हुए है)(फिलिप्पियों 2:6-11;इफिसियों 1:10)। इसलिये वह कहता है:"वह ऊँचे पर चढ़ा और बन्दियों को बाँध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए।"(उसके चढ़ने से और क्या पाया जाता है केवल यह कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था। और जो उतर गया यह वहीं है जो सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ परिपूर्ण करे)(इफिसियों 4:8-10)। विजयी स्वर्गारोहण इस बात को दर्शाता है कि यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा पाप और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली। उसके विजयी स्वर्गारोहण के द्वारा द्वारा सारी धरती की सभी जातियों और राज्यों पर यह प्रगट किया उसने अपनी दया और अनुग्रह की शक्ति से इन मसीहियों को जीत लिया है!

कुलुस्सियों 2:15 के अनुसार इतिहास में उसके द्वारा जीती गयी सारी बुरी शक्तियां कतार बनाकर यीशु मसीह के पीछे हो ली। विजयी परेड प्रदर्शित करती है कि यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान से अन्धकार की सारी शक्तियों को जीतकर सारे जगत के लोगों के सामने खुलासा कर दिया है।

1 पतरस 3:21-22 के अनुसार सारी जाति और सारे राज्यों की सारी अच्छी और बुरी आत्माएं स्वेच्छा से यीशु मसीह के अधीन हैं। यीशु मसीह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है(मत्ती 28:18;इफिसियों 1:20-23; प्रकाशितवाक्य 17:14)

1 कुरिन्थियों 15:25 और फिलिप्पियों 2:10-11 जितने लोग उसकी अनुग्रहकारी विजय के अधीन नहीं करते वे न्याय के दिन उसकी अधीनता को स्वीकार करेगें(यूहन्ना 5:22)।

5. 1 पतरस 4:1-6 का सही अनुवाद।

1 पतरस 4:1-6 में वर्णित घटना में उन लोगों के बीच तब सुसामचार प्रचार करने के बारे में कहा गया है जब वे जीवित थे,लेकिन पतरस के पत्री लिखते समय उनकी मृत्यु हो चुकी थी। वे उस समय की घटना के बारे में बताता है जब वे शारीरिक रूप में पृथ्वी पर जीवित थे, ताकि उनका उद्धार हो सके तथा वे इस दुनिया में जीवित रहते हुए भी अपने शरीर में शुद्ध जीवन व्यतीत कर सकें। हालांकि भविष्य में जाकर हमारा शरीर नष्ट हो जाएगा लेकिन उसके बावजूद भी धरती पर रहते हुए आत्मिक जीवन व्यतीत करने की जरूरत के बारे में बोला जा रहा है। 1 पतरस 4:6 में लिखा है "क्योंकि मरे हुओं को भी सुसमाचार इसीलिए सुनाया गया कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उनका न्याय हो, पर आत्मा में वे परमेश्वर के अनुसार जीवित रहें। उनका मानवीय आत्मा पहले से ही नया जन्म पाया हुआ था (आत्मा के सन्दर्भ में कहा जाए तो उन्होंने परमेश्वर के अनुसार जीवन व्यतीत किया) लेकिन उनकी मानवीय देह को तो मरना ही था (उनका मनुष्य के शारीरिक रूप में न्याय प्रक्रिया से होकर गुजरना ज़रूरी था)।

(1) पद 6 हमें सुसमाचार प्रचार करने के उद्देश्य के बारे में बताता है।

लोगों को सुसमाचार प्रचार करने का मुख्य कारण या तो उन्हें बचाना होता है या उन्हें दोषी ठहराना होता है! पद 3 से 5 कहता है कि जो लोग लगातार पाप व अनैतिकता में जीवन व्यतीत करते रहते हैं, उनका न्याय होगा। और पद 1,2,6 में कहा गया है कि मसीही लोगो का उद्धार होगा, जो अपना बाकि का जीवन परमेश्वर के लिए जीते हैं। मसीही लोगों समेत संसार के सारे लोगों का,"मानवीय देह के अनुसार न्याय होगा"। इसका अर्थ है कि *उनका शरीर पहले ही मरने के लिए शारीरित तौर पर आरोपी ठहर चुका* है,जैसा कि संसार के बाकि लोगों के साथ होता है(इब्रानियों 9:27)। मसीहियों को शारीरिक रूप से मरना ही होगा क्योंकि उनकी वर्तमान देह जिसमें मांस और लहू पाया जाता है परमेश्वर के राज्य में उनके लिए कोई स्थान नहीं है(1कुरिन्थियों 15:50)।

अत: जितने लोग सुसमाचार को प्रतिउत्तर देते हैं वे मसीही परमेश्वर के लिए जीएंगे। इसका अर्थ हुआ कि बहुत से मसीहियों के सताव में शहीद हो जाने के बावजूद बहुत से मसीही जन अपनी नयी आत्मा के कारण, मसीही जन परमेश्वर के लिए जिएंगे, परमेश्वर की सेवा और अराधना करेगें। उनके अन्दरूनी मनुष्यत्व के कारण परमेश्वर के वचनों और परमेश्वर के रास्ते के कारण आनिन्दत होगें। (यूहन्ना 4:23-24; रोमियों 7:22-25)। छोटे रूप में कहें तो, सारे सच्चे मसीही शुद्ध जीवन व्यतीत करेगें।

"मृतकों को सुसमाचार सुनाया गया। इस पंक्ति का अर्थ यह है कि जिन लोगों ने अपने जीवन काल में परमेश्वर के वचनों को सुना, चाहे वे सताव के द्वारा मरे हों या उनकी स्वाभाविक मृत्यु में मर गये हों, और पतरस के पत्री लिखने से पहले वे खत्म हो गये हों। मगर वास्तविकता यह है उनके जीवित दशा में मसीह पर विश्वास रखने के कारण उनके सताव में कोई

रियायत नहीं हुई। लेकिन इसने उन्हें पाप और अनन्त मृत्यु के दण्ड से बचा लिया; और इसने उन्हें सताव के बीच में शुद्ध और पवित्र जीवन जीने में सहायता की।

(2) पद 6 दूसरे अवसर के सिद्धान्त की शिक्षा न तो देता है और न दे सकत है।

पद 6 का मतलब यह कभी नहीं हो सकता कि सुसमाचार मृत लोगों की आत्माओं को प्रचार किया गया था चाहे वे अधोलोक में हो या नरक में, क्योंकि इन आत्माओं के पास देह नहीं होती। इसलिए पद 6 का केवल यह मतलब हो सकता है कि उन्हें उनके मरने से पहले ही सुसमाचार सुना दिया गया था। इस वचन का यह अर्थ कभी नहीं निकाला जा सकता कि लोगों के मरने के बाद उन्हें सुसमाचार सुनाया गया था अर्थात मरे हुओं की आत्मा को, क्योंकि उन आत्माओं के पास कोई देह नहीं थी कि सुसमाचार सुनाने के बाद में आप उन पर मृत्यु दण्ड देने के लिए दोष लगा सको।

निष्कर्ष। पद 6 हमें यह नहीं सिखाता कि सुसमाचार मृत लोगों की आत्माओं को सुनाया गया चाहे वे अधोलाक हो या नरक।

सारांश: बाइबल में कोई भी ऐसा प्रमाण नहीं है जो इस बात को दर्शाता हो कि मृत्यु के पश्चात सुसमाचार सुनने और उद्धार पाने का दूसरा अवसर मिलेगा। सुसमाचार केवल लोगों को उनके जीवित रहते हुए ही सुनाया जाता है। उनकी जीवित दशा में विश्वास या अविश्वास करना ही इस बात को निर्धारित करता है कि वे अपनी अनन्तता कहां बिताने जा रहे हैं।

"देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय है, देखो अभी वह उद्धार का दिन है।"(2कुरिन्थियों 6:2)!

"परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।"(मरकुस 1:15)